११. अद्‌भुत वीर

– रामधारी सिंह 'दिनकर'

'युग की अवहेलना शूरमा कब तक सह सकता है', इस पंक्ति का विस्तार कीजिए ।

कल्पना पल्लवन

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्‌यार्थियों से भारतीय शहीद जवानों के नाम पूछिए । ● घटनास्थल के बारे में कहलवाएँ । ● घटित घटना के बारे में कहने के लिए प्रेरित करें । ●विद्‌यार्थियों को इन घटनाओं से प्राप्त प्रेरणा बताने के लिए कहें ।

'जय हो' जग में जहाँ भी, नमन पुनीत अनल को,
जिस नर में भी बसे, हमारा नमन तेज को, बल को ।
किसी वृंत पर, खिले विपिन में, पर नमस्य है फूल,
सुधी खोजते नहीं गुणों का आदि, शक्ति का मूल ।

ऊँच-नीच का भेद न माने, वही श्रेष्ठ ज्ञानी है,
दया-धर्म जिसमें हो, सबसे वही पूज्य प्राणी है ।
क्षत्रिय वही, भरी हो जिसमें निर्भयता की आग,
सबसे श्रेष्ठ वही ब्राह्मण है, हो जिसमें तप-त्याग ।

तेजस्वी सम्मान खोजते, नहीं गोत्र बतलाके,
पाते है जग से प्रशस्ति अपना करतब दिखलाके ।
हीन मूल की ओर देख जग गलत कहे या ठीक,
वीर खींचकर ही रहते हैं इतिहासों में लीक ।

जिसके पिता सूर्य थे, माता कुंती सती कुमारी,
उसका पलना हुई धार पर बहती हुई पिटारी ।
सूत वंश में पला, चखा भी नहीं जननि का क्षीर,
निकला कर्ण सभी युवकों में तब भी अद्‌भुत वीर ।

तन से समरशूर, मन से भावुक, स्वभाव से दानी,
जाति-गोत्र का नहीं, शील का, पौरुष का अभिमानी ।
ज्ञान-ध्यान, शस्त्रास्त्र का कर सम्यक अभ्यास,
अपने गुण का किया कर्ण ने आप स्वयं सुविकास ।

परिचय

जन्म : २३ सितंबर १९०८ सिमरिया, मुंगेर (बिहार) **मृत्यु :** २४ अप्रैल १९७४ चेन्नई (तमिळनाडु)

परिचय : रामधारी सिंह 'दिनकर' जी अपने युग के प्रखरतम कवि के साथ-साथ सफल और प्रभावशाली गद्‌य लेखक भी थे । आपने निबंध के अतिरिक्त डायरी, संस्मरण, दर्शन व ऐतिहासिक तथ्यों के विवेचन भी लिखे हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी (खंड काव्य) टेसू राजा अड़े-अड़े (बालसाहित्य) परशुराम की प्रतीक्षा, रेणुका, नील कुसुम आदि (काव्य संग्रह), संस्कृति के चार अध्याय, चेतना की शिखा, रेती के फूल आदि (निबंध), वट पीपल (संस्मरण), देश-विदेश, मेरी यात्राएँ (यात्रा वर्णन), आत्मा की आँखें (अनुवाद) ।

पद्‌य संबंधी

खंडकाव्य : हिंदी साहित्य में यह प्रबंध काव्य का रूप है । मानव जीवन की किसी विशेष घटना को लेकर लिखा गया काव्य 'खंडकाव्य' होता है । इसमें केवल प्रमुख कथा होती है । प्रासंगिक कथाओं को इसमें स्थान नहीं मिल पाता है । कम से कम आठ सर्गों के प्रबंध काव्य को खंडकाव्य माना जाता है ।

प्रस्तुत काव्यांश 'रश्मिरथी' खंडकाव्य से लिया गया है । इसमें कवि ने कर्ण के बहाने तेज को नमन, समाज में समानता, कुलीनता छोड़कर योग्यता, कर्मठता को प्रधानता देने की प्रेरणा दी है ।

अलग नगर के कोलाहल से, अलग पुरी-पुरजन से,
कठिन साधना में उद्योगी लगा हुआ तन-मन से ।
निज समाधि में निरत, सदा निज कर्मठता में चूर,
वन्य कुसुम-सा खिला कर्ण जग की आँखों से दूर ।
नहीं फूलते कुसुम मात्र राजाओं के उपवन में,
अमित बार खिलते वे पुर से दूर कुंज कानन में ।
समझे कौन रहस्य ? प्रकृति का बड़ा अनोखा हाल
गुदड़ी में रखती चुन-चुन कर बड़े कीमती लाल ।
जलद-पटल में छिपा, किंतु रवि कबतक रह सकता है ?
युग की अवहेलना शूरमा कबतक सह सकता है ?
पाकर समय एक दिन आखिर उठी जवानी जाग,
फूट पड़ी सबके समक्ष पौरुष की पहली आग ।

रंग-भूमि में अर्जुन था जब समाँ अनोखा बाँधे,
बढ़ा भीड़ भीतर से सहसा कर्ण शरासन साधे ।
कहता हुआ, ''तालियों से क्या रहा गर्व में फूल ?
अर्जुन ! तेरा सुयश अभी क्षण में होता है धूल ।

—०—

('रश्मिरथी' से)

शब्द संसार

पुनीत (पुं.सं) = पवित्र
अनल (पुं.सं) = अग्नि
करतब (पुं.सं) =कर्तव्य
वृंत (पु.सं.) = वह पतला डंठल जिस पर फूल लगा रहता है ।
विपिन (पुं.सं.) = जंगल
क्षीर (पुं.सं.) = दूध
शरासन (पुं.सं.) = धनुष
शूरमा (पुं.सं.) =वीर

लेखनीय

'मैं लाल किला बोल रहा हूँ...' निबंध लिखिए ।

श्रवणीय

'दानवीर कर्ण' के बारे में कहानी सुनिए - महत्त्वपूर्ण अंश सुनाइए ।

आसपास

भारत के महत्त्वपूर्ण दस ऐतिहासिक स्थलों से संबंधित जानकारी अंतरजाल से प्राप्त कर हस्तलिखित पत्रिका बनाइए ।

संभाषणीय

किसी शहीद जवान के शौर्य संबंधी घटना का वर्णन कीजिए ।

विषय से...

दूध से दही बनने की प्रक्रिया पढ़िए और वैज्ञानिक कारण बताइए ।

नौवीं कक्षा, पृष्ठ ८८, विज्ञान और प्रौद्योगिकी,

पठनीय

हमारे देश की राजधानी दिल्ली में मनाए जाने वाले गणतंत्र दिवस समारोह का वर्णन समाचारपत्र से पढ़िए ।

पाठ से आगे

'हमारे देश की ऐतिहासिक वास्तुएँ हमारी धरोहर हैं ।' इनकी सुरक्षा हेतु उपायों की सूची बनाइए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) संजाल पूर्ण कीजिए :

कर्ण के नाम

(ख) प्रवाह तख्ता पूर्ण कीजिए :

कर्ण की विशेषताएँ

(ग) आकृति पूर्ण कीजिए :

श्रेष्ठ ज्ञानी —

 — जिसमें दया धर्म हो ।

क्षत्रिय वही — जिसमें तप त्याग हो ।

 —

(घ) साम्य-भेद लिखिए :

कर्ण-अर्जुन

साम्य
१) ____________
२) ____________

भेद
१) ____________
२) ____________

(च) भिन्नार्थक शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

(छ) तुकांत शब्द लिखिए ।

(२) ''चखा भी नहीं जननि का क्षीर'' काव्य पंक्ति से कर्ण की विवशता स्पष्ट कीजिए ।

(३) कविता में प्रयुक्त विरामचिह्नों के नाम लिखकर उनका अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

7YFK1T

रचना बोध

....

....

....